शोध-चिंतन पत्रिका : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई शोध पत्रिका
अंक : 1; जूलाई-दिसंबर, 2020; पृष्ठ संख्या : 50-62

असमीया लोकोक्तियों के परिप्रेक्ष्य में *फकरा-योजना*

उदिप्त तालुकदार

शोध-सार

विश्व-साहित्य में मौखिक साहित्य की परंपरा लिखित साहित्य से प्राचीन है और लोकसाहित्य में लोकजीवन के भाव एवं विचारों की सशक्त अभिव्यंजना हुई है। लोकमानस से व्युत्पन्न ऐसे साहित्य को लोकसाहित्य की संज्ञा दी जाती है। भारत के उत्तर-पूर्व प्रांत में स्थित असम प्रदेश में भाषा-साहित्य-संस्कृति के स्तर पर विविधता की दृष्टि से लोकसाहित्य की एक समृद्ध परंपरा रही है। इस समृद्ध परंपरा में लोकोक्तियों की कोटि में आनेवाली एक विधा है *फकरा-योजना*। *फकरा* में जहाँ व्यंजना शक्ति द्वारा धार्मिक उपदेश दिया जाता है, वही *योजना* में उदाहरण के जरिए किसी बात को समझाया जाता है। इसमें असमीया समाज-जीवन की यथार्थता को काफी निकटता से उकेरा गया है। इसलिए *फकरा-योजना* के माध्यम से असमीया जातीय जीवन के विविध पहलुओं को काफी गहराई से समझा जा सकता है। इस आलेख में वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति के सहारे असमीया भाषा की लोकोक्तियों के परिप्रेक्ष्य में *फकरा-योजना* के विविध पहलुओं पर एक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

बीजशब्द : *जनजीवन, लोकसाहित्य, वर्ण्य-विषय, समाज।*

प्रस्तावना

विकास के कई चरणों से गुजर कर मानव सभ्यता आज की स्थिति तक पहुँची है। विकास के इन चरणों में भाषा का विकास एक अहम कड़ी रहा है। सशक्त भाषिक अभिव्यक्ति द्वारा जैसे-जैसे मनुष्यों ने अपने विचारों को अभिव्यक्त किया, वैसे-वैसे साहित्य-रचना की परंपरा का भी विकास होता गया। साहित्य का नाम लेते ही इसके दो प्रमुख भेद हमारे सामने आते हैं- वाचिक और लिखित। लोकसाहित्य वाचिक के अंतर्गत आता है। लोकसाहित्य का संबंध उस साहित्य से है, जिसकी रचना जन-मानस में होती है। यह साहित्य जन-जीवन के भावों एवं विचारों की स्वच्छंद अभिव्यक्ति है। इसलिए इसमें जन-जीवन की प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक समय, प्रत्येक वर्ग और प्रकृति सभी कुछ समाहित हैं। अतः कहा जा सकता है कि किसी एक भौगोलिक परिवेश में एक जैसी सांस्कृतिक विशेषताओं से युक्त जन-मानस द्वारा कृत और मौखिक परंपरा में प्रचलित साहित्य ही लोक-साहित्य है। पूरे भारतवर्ष में अलग-अलग भाषाओं में व्यापक लोकसाहित्य का भंडार है। असम एवं असमीया भाषा में भी लोकसाहित्य की एक समृद्ध परंपरा रही है। आगे असमीया भाषा में लोकोक्तियों के परिप्रेक्ष्य में *फकरा-योजना* पर व्यापक अवलोकन किया गया है।

किसी जाति के समाज-जीवन, भाषा, संस्कृति आदि को जानने का सबसे उत्तम साधन है उसका साहित्य। लोकसाहित्य साहित्य का एक ऐसा रूप है, जिसका सृजन लोकमानस में होता है। इसलिए साहित्य का यह रूप किसी भी जाति के समाज-जीवन, संस्कृति का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करता है। *फकरा-योजना* भी असमीया लोकसाहित्य का एक ऐसा ही रूप है। अतः असमीया समाज-जीवन एवं संस्कृति को निकटता से जानने के लिए *फकरा-योजना* का अध्ययन महत्वपूर्ण है।

इस अध्ययन में विषय की सीमाबद्धता को ध्यान में रखते हुए *फकरा-योजना* में प्रतिफलित वर्ण्य-विषय को ही अध्ययन का केंद्रबिंदु बनाया गया है।

फकरा-योजना की सबसे प्रमुख विशेषता ही है वर्ण्य-विषयों की विविधता। *फकरा-योजना* में प्रतिफलित भिन्न वर्ण्य-विषयों का अवलोकन प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य है।

आलेख प्रस्तुतीकरण का एक अहम पड़ाव सामग्रियों का संकलन है। इस अध्ययन के दौरान प्रिंट एवं इलेकट्रॉनिक स्रोतों से प्राप्त लोकसाहित्य एवं असमीया *फकरा-योजना* संबंधी सामग्रियों का संकलन कर उनका विचार-विश्लेषण किया गया है। व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध-पद्धति के सहारे यह अध्ययन किया गया है। यहाँ और एक बात उल्लेखनीय है कि हिंदी भाषा के 'य' वर्ण के

लिए असमीया भाषा में दो वर्ण प्रयोग में हैं- एक का उच्चारण 'य' ही है और दूसरे का उच्चारण 'ज' जैसा होता है। असमीया 'य' के लिए हिंदी में भी 'य' रखा गया है, पर असमीया के 'य' के 'ज' वाले उच्चारण के लिए लिप्यंतरण में 'य़' का प्रयोग किया गया है। असमीया के बाकी वर्णों का हिन्दी लिप्यंतरण में कोई बदलाव नहीं किया गया है।

विश्लेषण

फकरा-य़ोजना के वर्ण्य-विषयों पर विचार-विश्लेषण करने से पूर्व लोकसाहित्य के वर्गीकरण तथा *फकरा-य़ोजना* के स्वरूप आदि बिंदुओं पर विचार करना आवश्यक है।

लोकसाहित्य का वर्गीकरण

मानव मन में उदय होनेवाले विचारों की भाषिक अभिव्यक्ति अनेक रूपों में हो सकती है। भाषागत अभिव्यक्ति को ध्यान में रखते हुए साहित्य के भी विविध रूप सामने आते हैं, चाहे वह साहित्य वाचिक हो या लिखित। परंतु लोकसाहित्य की परंपरा लिखित साहित्य से भी प्राचीन है। लिखित साहित्य की भाँति लोकसाहित्य भी जनमानस में कई रूपों में विद्यमान रहता है। विश्व की अलग-अलग भाषाओं में उपलब्ध होनेवाला लोक-साहित्य की विविधता असमीया भाषा में प्रचलित लोक-साहित्य में भी नज़र आती है। समय-समय पर विद्वानों द्वारा लोकसाहित्य के अलग-अलग विभाजन सुझाये गये हैं। लोक-साहित्य को मुख्यतः पाँच भागों में बाँटकर देखा जा सकता है- (क) लोक-गीत (ख) लोक-गाथा (ग) लोक-कथा (घ) लोक-नाट्य (ङ) लोक सुभाषित।

***फकरा-य़ोजना* का स्वरूप**

विश्व साहित्य के इतिहास को अगर ध्यान से देखा जाये तो यह स्पष्ट नज़र आता है कि दुनिया की प्रत्येक जाति के साहित्य ने पद्य के जरिए आत्माभिव्यक्ति की है। लोक-साहित्य के भी अनेक पद्यात्मक रूप हैं। लोकसाहित्य के उपर्युक्त वर्गीकरण के अंतर्गत लोक-गीत और लोक-सुभाषित में खासतौर पर पद्यात्मक लय देखने को मिलता है। ऊपर लोक-साहित्य का जो वर्गीकरण किया गया है, इसके आधार पर *फकरा-य़ोजना* को लोक-सुभाषित के अंतर्गत रखा जा सकता है। *फकरा-य़ोजना* का असमीया जातीय-जीवन के साथ एक निगूढ़ संबंध है। अतः इन लोक-सुभाषितों में राजनीति, अर्थनीति, समाजनीति, कृषि, शिल्प, गार्हस्थ्य, रहन-सहन आदि के संबंध में कई सारगर्भित उपदेश उपलब्ध होते हैं।

असमीया भाषा में *'फकरा'* का अर्थ है नीति वचन। हेमचंद्र बरुवा ने 'फकरा' को परिभाषित करते हुए कहा है-

> नीति शिकोवा बा कोनो कथार उदाहरण बा दृष्टांत देखोवा दुइ बा अधिक फाँकि कथा।
>
> (बरुवा 2007:721)

अर्थात् नीति सिखानेवाली या किसी बात का उदाहरण या दृष्टांत दिखानेवाली दो या अधिक पंक्तियाँ।)

फकरा-योजना के स्वरूप विवेचन की ओर आगे बढ़े तो हम देखते हैं कि इसमें *फकरा* और *योजना* दो शब्द हैं। असमीया लोक-सुभाषितों में जब व्यंजनाशक्ति के सहारे किसी धार्मिक उपदेशप्रधान विषयवस्तु को अभिव्यक्ति दी जाती है, उन्हें *फकरा* कहा जाता है। *फकरा* का प्रयोग लोकमानस में होने पर भी इसकी सामान्य व्याख्या संभव नहीं है। *फकरा* में दो अर्थ निहित होते हैं। एक उसका साधारण अर्थ और दूसरा धर्म संबंधी अर्थ। दूसरे अर्थ की व्याख्या धार्मिक एवं नैतिक प्रसंगों में भक्त समाज में होती है। साधारणतः *फकरा* चार पंक्तियों का होता है। *फकरा* की भाषा उदात्त एवं व्यंजना प्रधान होती है। वही *योजना* में एक बात को समझाने के लिए किसी दूसरे विषय का उदाहरण दिया जाता है। *योजना* का कोशगत अर्थ है संयोजन करना। इसको उपदेश प्रधान वाणी समूह भी कहा जा सकता है। *योजना* अक्सर दो पंक्तियों की होती है। इसके उपरांत छंदोबद्धता भी *योजना*ओं में नज़र आती है।

असमीया की तरह भारत की भिन्न-भिन्न भाषाओं में फकरा-योजना जैसी लौकिक उक्तियों का प्रचलन है। हिंदी में 'लोकोक्ति', 'मुहावरा', बांग्ला में 'प्रवचन', 'प्रवाद', 'प्राज्ञोक्ति', 'डाकेर वचन', उड़िया में 'लोकोक्ति', गुजराती में 'उख्खानु', 'काहेती', उर्दु में 'जार्बुल', 'मिचाल', तमिल में 'पाजोमेलि', सिंधी में 'डोहिरो, मणिपुरी में 'भाओरौ' आदि को असमीया *फकरा-योजना* का समानार्थी शब्द कहा जा सकता है।

विभिन्न लोक-साहित्य की भाँति *फकरा-योजना* की उत्पत्ति के संबंध में निश्चित रूप से कुछ भी कह पाना कठिन है। जीवन के वास्तविक अनुभवों को पृष्ठभूमि बनाकर संभवत किसी व्यक्ति द्वारा कुछ रसपूर्ण उक्तियाँ समय-समय अभिव्यंजित हुई होगी। समाज में किसी व्यक्ति के वास्तविक अनुभवों का दूसरे के साथ समानता होने के कारण इनका प्रयोग-क्षेत्र बढ़ता गया। कालांतर में विविध प्रयोजन हेतु मनुष्य का प्रव्रजन होने के परिणाम स्वरूप इन उक्तियों का प्रचार-प्रसार व्यापक स्तर पर हुआ। इस प्रकार एक सामाजिक प्रक्रिया से गुजर कर वैयक्तिक अनुभवों पर आधारित उक्तियों को लोकोक्ति की मान्यता मिल गयी।

फकरा-योजना का वर्ण्य-विषय

परिवर्तन शाश्वत सत्य है। समय के साथ-साथ समाज में हर स्तर पर परिवर्तन होता है और इस परिवर्तन का दस्तावेज ही है साहित्य। इसलिए साहित्य को समाज का दर्पण माना गया है। लोक-साहित्य मौखिक स्तर पर जन-जन में विद्यमान रहता है तथा अनुभवों की पृष्ठभूमि पर निर्मित होता है। अतः इसमें प्रतिफलित होनेवाला समाज-जीवन वास्तविकता से काफी निकट होता है तथा

समाज में होनेवाले परिवर्तनों की एक स्वच्छ झाँकी प्रस्तुत करता है। असमीया लोक-साहित्य में *फकरा-योजना* एक ऐसा वाचिक साहित्यिक रूप है, जिसमें असमीया समाज-जीवन की यथार्थता को काफी निकट से उकेरा गया है। इसलिए *फकरा-योजना* के माध्यम से असमीया जातीय जीवन के विविध पहलुओं को काफी गहराई से समझा जा सकता है। मनुष्य को वास्तविक जीवन के प्रत्येक पल में संघर्ष और समन्वय का सामना करना पड़ता है। *फकरा-योजना* के माध्यम से कभी इन्हें सरल काव्यिक रूप में तो कभी व्यंग्य के सहारे कलात्मक अभिव्यक्ति दी जाती है। फलस्वरूप *फकरा-योजना* में एक व्यापक वर्ण्य-विषय का फलक निर्मित होता है। इसमें ईश्वरीय गूढ़ बातों से लेकर कृषि, पारिवारिक संबंध, आर्थिक-सामाजिक स्थिति, व्यक्ति चरित्र जैसे विविध पहलुओं का चित्रण मिलता है। आगे *फकरा-योजना* में प्रतिफलित एक सम्यक अवलोकन करने का प्रयास किया गया है।

आध्यात्मिक तत्व संबंधी *फकरा-योजना*

असमीया समाज-जीवन में प्रचलित *फकरा-योजना* का एक प्रमुख वर्ण्य-विषय है आध्यात्मिकता। आध्यात्मिक तत्व की प्रधानता खासतौर *फकरा* में अधिक दिखाई पड़ती है। आध्यात्मिक तत्व से युक्त *फकरा* का अर्थ निगूढ़ होता है। जैसे-

ब्रह्माक मारिबा बिष्णुक मारिबा
रुद्रक निदिबा ठाइ,
महा महा महंतक मरियाइ मारिबा
तेहे पाबा बैकुंठत ठाइ ।

(कलिता 2003:203)

अर्थात् सत्व, रजः, तमः गुण और रिपुओं को वश में करके ही मनुष्य वैकुंठ की प्राप्ति कर सकता है ।

उपर्युक्त *फकरा* का सीधे तौर पर अर्थ लेने से अनर्थ होगा। प्रतीकधर्मी शब्दों के अर्थ समझने के पश्चात् ही वास्तविक अर्थ को समझा जा सकता है। आध्यात्मिक तत्व युक्त *फकरा* को असमीया समाज में '*भकतीया फकरा*'(=भक्त से संबंधित *फकरा*) की मान्यता प्राप्त है। शंकरदेव द्वारा असम में प्रचारित नववैष्णव धर्म के दार्शनिक विचारों की अभिव्यक्ति भी *फकरा-योजना* के माध्यम से हुई है।

कृषि संबंधी *फकरा-योजना*

असम की भौगोलिक अवस्थिति एवं जलवायु कृषि कार्य के अनुकूल होने के परिणामस्वरूप यहाँ आजीविका का मूलाधार कृषि है। वर्तमान समय में शिक्षा के व्यापक प्रचार के चलते आजीविका के नये साधन खुल गये हैं। मगर आज भी असम के ज्यादातर क्षेत्रों के घरों की आजीविका का साधन कृषि ही है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास ने पिछले कुछ दशकों में कृषि कार्य को व्यापक स्तर पर प्रभावित किया है। अतः आज नई-नई पद्धतियों के माध्यम से कृषि कार्य होने लगा है। असम में भी इन नई पद्धतियों को अपनाया जा रहा है। साथ ही इस क्षेत्र के किसान

वर्तमान समय में भी परंपरागत तरीकों का प्रयोग करते हैं। ऐसे में *फकरा-योजना* में वास्तविक अनुभवों के आधार किसानों को जो उपदेश दिया गया था, वह आज भी काफी लाभदायक प्रतीत होता है। कौन से मौसम में कौन से अनाज की खेती लाभदायक होती है तथा अन्य कृषि संबंधी मान्यताएँ *फकरा-योजना* में उपलब्ध हैं। जैसे-

आहिन काति राखिबा पानी
रजाई जेनेकै राखे रानी। (कलिता 2003:99)

अर्थात् जिस प्रकार राजा अपनी रानी को बहुत ही प्यार के साथ रखता है, उसी प्रकार आश्विन और कार्तिक महीने में खेतों में पानी रखना चाहिए।

फिर-

आहु खेति आहुकाल
मुगा खेति कपाल भाल। (फुकन 2016:102)

अर्थात् *आहु* धान की खेती विपत्ति का सूचक है, जबकि *मुगा* (=असम का रेशम, जो बहुत महंगा होता है) की खेती प्राचुर्य का।

आर्थिक-सामाजिक परिवेश संबंधी *फकरा-योजना*

फकरा-योजना में समाज के विविध पहलुओं को उठाया गया है। *फकरा-योजना* आर्थिक दृष्टिकोण से असमीया लोक सामज की जो छवि प्रतिफलित हुई है वह अत्यंत मार्मिक है। बिहु असमीया लोगों का जातीय उत्सव है। साधारण लोगों की आर्थिक स्थिति इतनी खराब होती है कि इस त्योहार को मनाने के लिए भी दूसरों से पैसे उधार लेने पड़ते हैं। इस स्थिति का उदाहरण है-

धार करा धनेरे चतर बिहु खाओँ
धरुवाइ निये यदि आगे आगे याओँ।

(फुकन 2016:83)

अर्थात् उधारी के धन से चैत का बिहु मनाता हूँ। यदि उधार देनेवाला ले जाता है तो आगे-आगे चलता हूँ।

खराब आर्थिक स्थिति को दर्शाने के लिए इस तरह का वर्णन भी *फकरा-योजना* में आया है कि पति और पत्नी कपड़े के अभाव में एक ही कपड़ा पहनते हैं-

एको डोखर कानि,
जेठतो हाल बाय,
मइ आनो पानी।

(फुकन 2016:86)

अर्थात् एक ही कपड़े को हल जुटने के समय पति भी पहनता है और पानी लाने के दौरान पत्नी भी पहनती है।

इस प्रकार *फकरा-योजना* के माध्यम से लोगों की आर्थिक स्थिति का एक मार्मिक चित्र हमारे सामने प्रस्तुत हो जाता है। आर्थिक स्थिति के साथ-साथ सामाजिक एवं राजनैतिक स्थिति की झाँकी इन लोक-सुभाषितों में देखने को मिलती है। असमीया समाज-व्यवस्था की वैयक्तिक और सामूहिक चित्रण *फकरा-योजना* में इस प्रकार मिलता है-

राइजे जय बुलिलेइ जय

क्षय बुलिलेइ क्षय ।(फुकन 2016:95)

अर्थात् जनता या समूह के पास किसी वस्तु के सृजन और संहार की क्षमता होती है ।

इस प्रकार का और एक उदाहरण है-

राइजे नख जोकारिले नै बय ।

(फुकन 2016:96)

अर्थात् लोग अगर मिलकर काम करे तो असंभव को भी संभव किया जा सकता सकता है ।

समूह को महत्ता देनेवाली असमीया लोगों की यह विशेषता आज भी असमीया समाज में विद्यमान है।

फकरा-योजना में विविध राजनैतिक परिदृश्यों की छवि भी मिलती है। किसी भी शासन-व्यवस्था में जनता की भूमिका अहम होती है। राजनीतिक व्यवस्था में जनता के बिना राजा अर्थात् शासक वर्ग का कोई अस्तित्व नहीं। यथा-

राइजेइ रजा, राइजेइ प्रजा

राइज नहले किहरनो रजा ।

(कलिता 2003:137)

अर्थात् जनता ही राजा है और जनता ही प्रजा है। जनता के बिना राजा का कोई अस्तित्व नहीं होता ।

इसके अलावा शासन-व्यवस्था में राजा की शक्ति को दर्शाते हुए *फकरा-योजना* में कहा गया है-

रजाइ भाल बोले याक

हाती घोराओ नालागे ताक ।

(कलिता 2003:143)

अर्थात् राजा जिसे चाहता है, उसे किसी भी चीज का अभाव नहीं होता है।

इसके अलावा शासन-व्यवस्था में अधिकारियों की मानसिकता कैसी होती है उसका एक वास्तविक चित्र *फकरा-योजना* में इस प्रकार उकेरा गया है-

नदीर बन नाइ खाने आरु पोते

बिषयार बन नाइ भाङे आरु पाते ।

(कलिता 2003:103)

अर्थात् नदी जिस प्रकार एक जगह का खनन करती है और बाद में उसी जगह को फिर मिट्टी से भर देती है, उसी प्रकार अधिकारी पहले खुद तोड़ता है और बाद उसी को बनाता है। अधिकारी ऐसा केवल धन प्राप्ति की लालसा से करता है। लोगों के प्रति उनका दायित्वबोध नहीं है।

लोक-विश्वास संबंधी *फकरा-योजना*

मनुष्य का ज्ञान-भंडार सीमित होता है। कार्य-कारण संबंध के आधार पर मनुष्य कुछ सिद्धांतों पर पहुँचता है। परंतु जरूरी नहीं कि किसी विशेष कार्य से जिस सिद्धांत पर पहुँचा जाये वह हमेशा एक जैसा हो। विभिन्न अपवाद रहने के बावजूद भी मनुष्य जिस साधारण सिद्धांत पर अक्सर पहुँचता है, उसी के आधार पर विश्वासों का निर्माण होता है। जब व्यक्ति विशेष में निर्मित होनेवाला यह विश्वास सामाजिक प्रक्रिया से गुजरकर लोक की मान्यता प्राप्त करता है, तो उसे

लोक-विश्वास कहा जाता है। लोक-जीवन में लोक-विश्वासों का काफी महत्व है। क्योंकि इन्हीं के आधार पर समाज में परंपराओं का निर्माण होता है। असमीया *फकरा-योजना* में असमीया लोक-जीवन में प्रचलित लोक-विश्वासों की एक सुंदर छवि प्रस्फुटित हुई है। इनमें कृषि, मौसम, रोजाना के काम-काज, मानव-स्वभाव तथा धर्म संबंधी लोक-विश्वासों की प्रधानता है।

कृषि प्रधान प्रदेश होने के फलस्वरूप इस क्षेत्र में अनेक कृषि संबंधी लोकविश्वासों का प्रचलन है। इसका एक उदाहरण इस प्रकार है-

यदि बरषे आघोणे
रजा याय मागने
यदि बरषे माघर शेष
धन्य रजार पुण्य देश ॥ (फुकन 2016:61)

अर्थात् जिस साल माघ महीने के अंत में बरसात होती है उस साल अनाज अच्छा होता है। लेकिन अगहन महीने में खेतों में धान पक जाता है। अतः इस समय बरसात होने पर नुकसान होता है।

इस प्रकार मौसम संबंधी एक लोक-विश्वास का उदाहरण इस प्रकार है-

पुबे धेनु धान पश्चिमे धेनु बान ।
(फुकन 2016:108)

अर्थात् अगर इंद्रधनुष पूर्व दिशा में निकलता है तो वह समय कृषि के अनुकूल है। वही इंद्रधनुष अगर पश्चिम दिशा में निकलता है, तो उस साल बाढ़ की संभावना रहती है ।

कृषि से जुड़े लोक-विश्वासों के अतिरिक्त प्राकृतिक वातावरण, मानव-स्वभाव, पशु-पक्षी के लक्षण, धर्म संबंधी, खाद्य संबंधी आदि असमीया लोकमानस में प्रचलित कई तरह के लोकविश्वासों की झाँकी *फकरा-योजना* में देखने को मिलती है। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

सापे खाय लेखि
बाघे खाय देखि ।(फुकन 2016:104)

अर्थात् बाघ अगर किसी अन्य प्राणी को देख लेता है तो सीधे उस पर हमला करता है। लेकिन साँप देखने मात्र से हमला नहीं करता, अपितु उसे खतरा महसूस होने पर आत्मरक्षा हेतु हमला करता है।

अन्य एक उदाहरण देखिए-

तिरोतार कपाले धन,
पुरुषर कपाले जन। (फुकन 2016:121)

अर्थात् पुरुष के कारण बच्चे और नारी के भाग्य के फलस्वरूप धन-संपदा की प्राप्ति होती है।

इसके अलावा ईश्वर संबंधी लोक-विश्वास का एक उदाहरण इस प्रकार है-

हरिये नाराखिले कि जरीये राखिब ।
(फुकन 2016:122)

अर्थात् भगवान अगर रक्षा न करें, तो कोई नहीं कर सकता ।

असमीया समाज-जीवन में भगवान को परम शक्तिमान माना गया है। इसलिए इसमें कहा गया

है कि केवल भगवान ही हमें मुश्किलों से बाहर निकाल सकता है।

पारिवारिक संबंध संबंधी *फकरा-योजना*

समाज की प्राथमिक इकाई है परिवार। मानव सभ्यता जैसे-जैसे आगे बढ़ी वैसे-वैसे लोग परिवार बनाकर रहने लगे। समाज में जन्म एवं विवाह के माध्यम से विभिन्न पारिवारिक संबंधों का निर्माण होता है। *फकरा-योजना* में माता-पिता, पति-पत्नी, भाई-बहन, बेटा-बेटी, सास-बहु आदि अनेक पारिवारिक संबंधों के चित्रों को खींचा गया है। इन संबंधों के चित्रों को उठाने की प्रक्रिया में समाज में संबंधों के महत्व को भी दर्शाया गया है। जैसे निम्नोक्त *फकरा-योजना* में पिता, माता, पत्नी और भाई के महत्व को दर्शाया गया है-

पितृ अबिहने संसारर परे भार
मातृर अबिहने भोजनर छारखार
भार्या अबिहने कुचित निदिये ठाइ
भातृ अबिहने शत्रुवे लाइ पाय।

(फुकन 2016:24)

अर्थात् पिता के बिना घर-परिवार का दायित्व बच्चों पर आ जाता है तो माता के बिना भोजन की व्यवस्था नष्ट हो जाती है। वही पत्नी के बिना समाज में पति को सम्मान नहीं मिलता और भाई के बिना शत्रुओं को मौका मिलता है।

समय के साथ-साथ समाज के पारिवारिक संबंधों में भी परिवर्तन होता रहता है। आज विविध आर्थिक-सामाजिक कारणों से असमीया समाज में संयुक्त परिवार कम होने लगे हैं और इसका स्थान एकल परिवार ने ले लिया है। इसके फलस्वरूप सास-ससुर-बहू, भाभी-ननद जैसे रिश्तों के मायने बदलने लगे हैं। यहाँ तक कि माता-पिता एवं बेटा-बेटी तथा पति-पत्नी के संबंधों में पुराने सामाजिक मूल्य घट रहे हैं तथा नवीन मूल्यों का संयोजन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों के बीच रिश्तों के मनोवैज्ञानिक पहलु भी *फकरा-योजना* में अभिव्यक्त हए हैं।

प्रत्येक समाज-व्यवस्था में नारी की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। चाहे वह नारी समाज में माँ, पत्नी, बेटी या अन्य किसी भी रूप में हो। असमीया समाज-जीवन में इन सभी रूपों में नारी के महत्व को प्रतिपादित किया गया है। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

घैणीयेइ घर
घैणी नहले घरेइ अथर।(फुकन 2016:31)

अर्थात् पत्नी के बिना घर की हालत अस्थिर बन जाती है।

फकरा-योजना के माध्यम से असमीया जनसमाज के भिन्न पारिवारिक संबंधों के चित्रों को खींचा गया है। इसमें मातृ को सभी रिश्तों में सर्वोपरि रूप में प्रस्तुत किया गया है। व्यक्ति विशेष की जिंदगी में चाहे कितने ही लोग क्यों न हो, मगर माँ का स्थान सर्वोपरि होता है। माँ के इसी महत्व को दिखाते हुए कहा गया है-

सांदह हओक चिरा हओक

नहय डाङर समान
माही हओक पेही हओक
नहय आइर समान। (फुकन 2016:39)

अर्थात् हमारी जिंदगी में बुआ, मौसी जैसी कितनी ही नारियाँ क्यों न हो मगर माँ का स्थान कोई नहीं ले सकता। माँ के समान प्यार कोई और नहीं दे सकती।

मानव चरित्र संबंधी *फकरा-योजना*

मानव चरित्रों का आकलन *फकरा-योजना* के वर्ण्य-विषयों में अन्यतम है। समाज में विभिन्न प्रकार के चरित्रों के लोग रहते हैं। अच्छे और बुरी स्वभाव से व्यक्ति के चरित्र का निर्माण होता है। *फकरा-योजना* के माध्यम से अच्छे स्वभाव के निर्माण का जहाँ उपदेश दिया गया है, वही बुरे स्वभाव की कटु आलोचना भी हुई है। अहकांर स्वभाव की आलोचना *फकरा-योजना* में इस प्रकार हुई है-

बाहिरत बर चुरियार फेर
भितरत ढकुवार बेर ।(कलिता 2003:122)

अर्थात् अहंकार प्रवृत्ति के कारण लोग बाहरी दिखावा या आडंबर करते हैं। लेकिन उनके घर की स्थिति अत्यंत खराब है ।

इसके अलावा नशा जैसी कु प्रवृत्ति के न्कुप्रभाव को *फकरा-योजना* के माध्यम से इस प्रकार दिखाया गया है-

कानियाइ कानि खाय ।
गा करिले लाहि
लाहे लाहे बेचि खाले
मजियार काँही । (कलिता 2003:42)

अर्थात् जो व्यक्ति नशा करता है वह अपने शरीर को तो नुकसान पहुँचाता ही है साथ ही इस नशे के कारण सब कुछ बेचकर घर की हालत भी कमजोर करता है।

असमीया समाज में पुरुष का चरित्र कैसा होना चाहिए इस संबंध में कुछ मान्यताएँ हैं। *फकरा-योजना* में पुरुष के स्वभाव संबंधी लोकविश्वास की अभिव्यक्ति इस प्रकार हुई है-

खोजत धीर, कथात थिर
ताक जानिबा महाबीर ।
(कलिता 2003:162)

अर्थात् जो चाल-धाल में धीर तथा बातों में स्थिर हो वह महावीर है ।

इस प्रकार मानव स्वभाव संबंधी बहुत-सी *फकरा-योजना*ओं का असमीया समाज-जीवन में प्रचलन है।

गार्हस्थ्य जीवन संबंधी *फकरा-योजना*

फकरा-योजना में असमीया गार्हस्थ्य जीवन की सुंदर झाँकी प्रस्तुत हुई है। इससे तत्कालीन असमीया समाज की गृह-परिकल्पना, खान-पान, रहन-सहन, रीति-रिवाज आदि का सामान्य आभास मिलता है। असमीया लोगों द्वारा गृह निर्माण में जरुरतों को प्रधानता देते हुए गृह निर्माण की बात कही गई है। शायद इसलिए घर के आकार को छोटा करने के लिए कहा गया है और

जरूरतों के हिसाब से नये घर बनाने की बात *फकरा-योजना* में आयी है-

सरु सरुकै साजिबा घर

यिमान लागे सिमान कर ।(फुकन2016:49)

अर्थात् घर छोटे हों, जितना चाहिए उतना बनाना सठीक है।

इसके अलावा असमीया समाज-जीवन में घर के आस-पास ही ज्यादातर जरूरतों को पूरा करने के लिए साधनों को रखने की बात कही गई है। इसका प्रतिफलन *फकरा-योजना* में इस प्रकार होता है-

उत्तरे चरु, दक्षिणे गरु ।

पूबे भँराल। पश्चिमे गँड़ाल ॥

(फुकन 2016:48)

अर्थात् घर की उत्तर दिशा में रसोई घर, दक्षिण दिशा में गौशाला, पूर्व दिशा में भंडारा और पश्चिम दिशा में हंस, मुर्गी का बसेरा होना चाहिए।

इस प्रकार का और एक उदाहरण है-

आगफाले पुखुरी, पिछफाले बाँहबारी

उत्तरे पान-तामोल, दक्षिणत मुकलि ।

(फुकन2016:47)

अर्थात् घर के सामने तालाब हो, ताकि वहाँ से पानी की जरूरत पूरी हो जाये। घर के पीछे बाँस के पेड़ रहे। उत्तर दिशा में पान-ताम्बूल की बाड़ी हो। वही दक्षिण दिशा को खुला रखा जाएँ ।

गृह निर्माण के अतिरिक्त एक सामान्य असमीया घर सुबह से शाम तक किन रीति-रिवाजों से परिचालित होता है, कौन-कौन से संस्कारमूलक एवं धर्मीय अनुष्ठानों का आयोजन घर में होता है, उन सभी का वर्णन *फकरा-योजना* में उपलब्ध है। खाद्य-रीति संबंधी तत्व भी 'फकरा-योजना' में निहित है। पौष्टिक तत्वों को ध्यान में रखते हुए किस प्रकार का खाना खाना चाहिए उसके संबंध में भी *फकरा-योजना* में नीति-निर्देश दिये गये हैं। जैसे-

मांसत मांस बाढ़े घृत बाढ़े बल ।

दुग्धे चंद्र(शक्ति) बाढ़े, शाकत बाढ़े मल ॥

(फुकन 2016:53)

अर्थात् मांस खाने से शरीर मोटा होता है और घी खाने से शक्ति बढ़ती है। दूध से भी शक्ति बढ़ती है। शाग से शौच बढ़ता है।

असमीया खाद्याभास में चावल की महत्वपूर्ण भूमिका है। चावल से बने कई तरह के पकवानों का प्रयोग रोजाना होता है। इसलिए चावल से संबंधित *फकरा-योजना* की मात्रा अधिक है।

आगते चाउलर कथा ।

पाछतहे हरिर कथा ॥ (कलिता2003:5)

अर्थात् पहले चावल की बात करो, बाद में हरि का नाम लेना।

फिर-

भातर भात, दिनटोलै थाके मात ।

(कलिता2003:6)

अर्थात् भात से दिन भर की शक्ति मिलती है।

फिर-

चारि बेद चौद्ध शास्त्र
भात नहले एदिन मात्र।

(कलिता2003:10)

अर्थात् चार वेद और चौदह शास्त्रों से भी भात बड़ा है। भात न मिलने से एक दिन भी नहीं कटता।

इसके अतिरिक्त असमीया समाज-जीवन में पुरुष एवं नारी द्वारा प्रयोग किये जानेवाली वेश-भूषा का आभास भी *फकरा-योजना* के माध्यम से हो जाता है। इस प्रकार जीवन से जुड़ी छोटी-बड़ी हर बात को अति सूक्ष्म रूप से *फकरा-योजना* के माध्यम से प्रस्तुत हुआ है।

निष्कर्ष

परिवर्तन सृष्टि का शाश्वत नियम है। परिवर्तन ही सृष्टि के कण-कण को प्रवाहमान एवं विकासमान बनाये रखता है। समय के साथ होनेवाले परिवर्तन की झाँकी समाज-जीवन में देखने को मिलती है। प्रत्येक क्षण पूराने मूल्यों के विघटन एवं नवीन मूल्यों के सृजन का साक्षी है। इसलिए एक ही समाज-व्यवस्था में दो भिन्न कालावधि के व्यक्ति में अनुभवों की भिन्नता आती है। ऐसे में अनुभवाश्रित *फकरा-योजना* जैसे लोक-साहित्य के वर्ण्य-विषयों की प्रासंगिकता अवश्य बदलती रहती है। जिन अनुभवों को आधार बनाकर *फकरा-योजना* में असमीया समाज-जीवन का चित्र खींचा गया है, वे अनुभव वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हासिल कर पाना मुश्किल है। अतः *फकरा-योजना* में प्रतिफलित समाज के साथ आज के असमीया समाज का पूर्ण तादात्म्य संभव नहीं है। ऐसा होते हुए भी *फकरा-योजना* के माध्यम से विभिन्न संदर्भों में जो उपदेश दिये गये हैं तथा व्यंजना के सहारे समाज की कुरीतियों का जिस प्रकार आलोचना की गई है, वे बेहतर समाज के निर्माण में सहायक हैं। इसके उपरांत समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, भाषाविज्ञान आदि अन्य विषयों के सहयोग से *फकरा-योजना* का व्यापक अध्ययन करने पर असमीया जाति के समाज-जीवन, भाषा, संस्कृति के संबंध के कई नवीन तथ्यों के उद्घाटन की संभावना बनती है। अर्थात् हम कह सकते हैं कि *फकरा-योजना* में ऐसे कई सार्वजनीन तत्व विद्यमान हैं, जिससे इसकी काल-निरपेक्ष प्रासंगिकता स्पष्ट हो जाती है।

ग्रंथ-सूची

असमीया

कलिता, फुलकुमारी. लोक साहित्यर रह-घरा फकरा योजना . डिगाबाई: निप कुमार डेका, 2003.

दास, दिलीप कुमार. लोकसंस्कृतिर सफुँरा. गुवाहाटी: लयार्स बुक स्टल, 2005.

फुकन, चित्रलेखा. फकरा-योजना आरु असमीया समाज . योरहाट: असम साहित्य सभा, 2016.

बरुवा, बिरिंचि कुमार. असमीया लोकसंस्कृति . गुवाहाटी: बीणा लाइब्रेरी, 2011.

बरुवा, हेमचंद्र. हेमकोष. तेरहवाँ. गुवाहाटी:हेमकोष प्रकाश, 2007.

हिंदी

वर्मा, धीरेंद्र(संपा). प्रभात बृहत् हिंदी शब्दकोश. प्रथम. नई दिल्ली:प्रभात प्रकाशन, 2010.

संपर्क-सूत्र
अतिथि अध्यापक
हिंदी विभाग, पांडु महाविद्यालय, गुवाहाटी-781012
ई-मेइल: udiptatalukdar94@gmail.com
मोबाइल: 7002272818